सुखमय धाम
जीवन विद्या प्रतिष्ठान
गोविन्दपुर - खारी (झालू) जि० - बिजनौर, उ०प्र० - 246728 ☎ : (01342) 87060, 87511

राष्ट्रीय जीवन विद्या सम्मेलन

अभियान की दिशा, कार्य योजना-विचार-उत्सव
17 से 19 नवम्बर 2000, शुक्रवार से रविवार तक
(मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष – षष्ठी से नवमी वि० स०–2057)

सादर-आमन्त्रण

अभ्युदय (सर्वशुभ) को प्रमाणित करने का नाम अभियान है। अभियान उत्सव में, उत्सव से एवं उत्सव के लिए है। अभियान का मूल सर्वशुभ (सर्वतोमुखी समाधान, अखण्ड समाज एवं सार्वभौम मानवीय विश्व व्यवस्था – स्वतन्त्रता एवं स्वराज्य) है। जिसकी आवश्यकता, सम्भावना, व्यवहारिकता एवं नियति है। जिसमें स्वानुशासन पूर्ण मानव, समृद्धि पूर्ण परिवार, न्याय पूर्ण समाज, अभयपूर्ण राष्ट्र, सहअस्तित्व पूर्ण विश्व और सन्तुलन पूर्ण निसर्ग होगा। जिससे तथाकथित सम्पूर्ण समस्याओं का मार्ग प्रशस्त होगा। प्रचलित बाजार, सरकार तथा अमानवीय व्यवस्था के स्थान पर मानवीय व्यवस्था साकार होगी।

देश भर में विभिन्न स्थानों पर अनेक साथी विभिन्न प्रकार से स्वतन्त्रता एवं स्वराज्य को साकार करने के लिए प्रयासरत हैं इस दिशा में अब तक हुए प्रयास का मूल्यांकन करने, आज की परिस्थिति में अभियान की आगामी दिशा तय करने, समझ की एकरूपता एवं परस्पर स्नेह, मैत्री, विश्वास को सफल बनाने हेतु 17 से 19 नवम्बर, 2000 को गोविन्दपुर में राष्ट्रीय जीवन विद्या सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

सम्मेलन में भागीदारी सम्मेलन की सफलता को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी हमारी–आपकी है अतः इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए उपरोक्त बिन्दुओं को सार्थक बनाने हेतु आप सभी की सम्मेलन में भागीदारी अपेक्षित है।

दूसरे इस धरती पर स्वराज्य से महत्त्वपूर्ण कोई कार्य आप हम नहीं दिखा सकते, इन अर्थों में भी भागीदारी अपेक्षित है। तीसरा सबको ध्यान में रखकर ही सम्मेलन का आयोजन किया जाना है ऐसे में किसी की भागीदारी न हो तो फर्क पड़ता है, सम्मेलन का अर्थ पूरा नहीं पड़ता। अतः सभी जगह से सभी प्रमुख साथियों की भागीदारी की अपेक्षा है।

- आप अपने कार्य का संक्षिप्त स्पष्ट विवरण, आगामी योजना तथा परस्पर सहयोग के ताने–बाने पर अपने विचार सम्मेलन से पूर्व लिखकर भेज सकें तो सार्थक रहेगा। अपनी मर्यादाओं का भी उल्लेख करें।
- आप 16 नवम्बर की शाम तक गोविन्दपुर पहुँच जाएं। साधारण भोजन एवं आवास की व्यवस्था रहेगी। मार्ग व्यय आपको स्वयं वहन करना होगा। नवम्बर में यहां सर्दी पड़ती है अतः गर्म कपड़े साथ लाएं।

सम्पर्क-सूत्र – दिल्ली

1. डा० संजीव जैन, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग (निवास–36 वैशाली), आई.आई.टी. हौज खास, नई दिल्ली, ☎ नि0 6525478, 6591593, का0– 6591060
2. डा० सतेन्द्र, MIG, B-715, डी.डी.ए. फ्लैट, चित्रकूट, पूर्वी लोनी रोड, दिल्ली–110 093 : ☎ नि0 2513068
3. रमेश चन्द्र रस्तौगी–14/197, मालवीयनगर, नई दिल्ली, ☎ नि0 6880704, 6283155, ☎ का0 6018693, 6011484 मोबाइल : 9810179080
4. अशोक–शीला, 1461, Sec-37, नोएडा–201303, उ०प्र०, ☎ नि० 0120–4572977 (दिल्ली से नोएडा 91–4572977)

बिजनौर

1. महाराज सिंह, जिला सहकारी बैंक निकट विकास भवन, रोडवेज बस स्टैण्ड, बिजनौर, । ☎ का. 01342–62832, निवास–रशीदपुर गढ़ी–निकट बिजनौर। ☎ 01342–64497
2. मा० जगराम सिंह, बुखारा, विदुर कुटी रोड–बिजनौर फोन : निवास – 01342–61377

धामपुर

वी.पी. सिंह, अधिशासी अध्यक्ष धामपुर शुगर मिल्स, धामपुर जिला बिजनौर (उ०प्र०) ☎: नि०– 01344–20149, 20074 कार्यालय– 01344–20985, 20006

गोविन्दपुर

रणसिंह आर्य, देशपाल, वीर सैन–गोविन्दपुर–खारी जि०–बिजनौर, फोन–01342–87060, 87511

सूचना

- दिल्ली, धामपुर, नजीबाबाद, बिजनौर से गोविन्दपुर आने के लिए सूचना पर गाड़ी की व्यवस्था करने का प्रयास किया जायेगा।
- दिल्ली से 16 नवम्बर की दोपहर में गोविन्दपुर के लिए गाड़ी चलेगी। इसके अलावा दिल्ली से निजी वाहनों से भी लोग सम्मेलन में आयेंगे, उनके साथ भी आया जा सकेगा।
- दिल्ली में विश्राम करने / ठहरने, वापसी का आरक्षण करवाने हेतु दिल्ली के मित्रों से सम्पर्क करें।
- किसी भी प्रकार के सहयोग हेतु उपयुक्त सम्पर्क पर अग्रिम सूचना देने का कष्ट करें।

मार्ग

- गोविन्दपुर , खारी गाँव के उत्तर में 1.5 किमी पर खारी–मौजीपुर मार्ग पर है। खारी, बिजनौर से 8 किमी. पूरब में झालू के निकट, बिजनौर–झालू– नहटौर मार्ग पर है। बिजनौर में झालू बस स्टैण्ड से या रामलीला मैदान से खारी के लिए प्राइवेट बस मिलती है। चाँदपुर, नहटौर, नगीना से भी प्राइवेट बसें खारी आती हैं।
- दिल्ली में अन्तर्राज्यीय बस अड्डा–कश्मीरी गेट, मेरठ, मुरादाबाद, देहरादून, नजीबाबाद, मुजफरनगर से बिजनौर के लिए अच्छी बस सेवा उपलब्ध है। अपने वाहन से दिल्ली–मेरठ से वाया (मवाना या खतौली) मीरापुर होकर बिजनौर आएं। देहरादून–हरिद्वार से नजीबाबाद होकर सड़क के रास्ते बिजनौर आए।
- नजीबाबाद–गजरौला रेल मार्ग पर निकटतम रेलवे स्टेशन खारी–झालू एवं बिजनौर है।
- पूर्वोत्तर से लखनऊ मुरादाबाद होकर जम्बूतवी व देहरादून की ओर जाने वाली रेलगाड़ियों से धामपुर या नजीबाबाद उतरें। लखनऊ–सहारनपुर एक्स० से बिजनौर उतरें।
- खारी बस स्टैण्ड पर शिव आर्य मेडिकल स्टोर, खारी में सड़क पर ही श्री प्रशान्त महर्षि के फार्म या खारी गाँव में श्री सोम दत्त पाण्डे जी से आवश्यकता पड़ने पर सम्पर्क कर सकते हैं।

इस खुशहाली के अवसर पर गोविन्दपुर में आपको आमन्त्रित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। इस उत्सव वेला में आपकी **गौरवमय उपस्थिति, प्रस्तुति, सहभागिता, प्रेरणा एवं आशीर्वाद से हम सब परस्पर उपकारान्वित होंगे। पहले दो दिन की चर्चा अभियान में सक्रिय रूप से जुड़े साथियों के लिए सार्थक है। अन्तिम (तीसरे) दिन उत्सव में सभी का स्वागत है। सम्मेलन का विस्तृत विवरण परिवार मानव पत्रिका के अंक-२६, जुलाई-अगस्त २००० के पृष्ठ १६ से २६ में भी छपा है। नित्य उत्सव कामना के साथ।**

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

निवेदक :

जीवन विद्या परिवार, गोविन्दपुर-बिजनौर, उ०प्र०

सुखमय धाम

जीवन विद्या प्रतिष्ठान

गोविन्दपुर - खारी (झालू) जि० - बिजनौर, उ०प्र० - 246728

☎ : (01342) 87060, 87511

राष्ट्रीय जीवन विद्या सम्मेलन

अभियान की दिशा, कार्य योजना-विचारोत्सव

17 से 19 नवम्बर 2000, शुक्रवार से रविवार तक

(मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष – षष्ठी से नवमी वि० सं०–2057)

सादर-आमन्त्रण

अभ्युदय (सर्वशुभ) को प्रमाणित करने का नाम अभियान है। अभियान उत्सव में, उत्सव से एवं उत्सव के लिए है। अभियान का मूल सर्वशुभ (सर्वतोमुखी समाधान, अखण्ड समाज एवं सार्वभौम मानवीय विश्व व्यवस्था – स्वतन्त्रता एवं स्वराज्य) है। जिसकी आवश्यकता, सम्भावना, व्यवहारिकता एवं नियति है। जिसमें स्वानुशासन पूर्ण मानव, समृद्धि पूर्ण परिवार, न्याय पूर्ण समाज, अभयपूर्ण राष्ट्र, सहअस्तित्व पूर्ण विश्व और सन्तुलन पूर्ण निसर्ग होगा। जिससे तथाकथित सम्पूर्ण समस्याओं का मार्ग प्रशस्त होगा। प्रचलित बाजार, सरकार तथा अमानवीय व्यवस्था के स्थान पर मानवीय व्यवस्था साकार होगी।

देश भर में विभिन्न स्थानों पर अनेक साथी विभिन्न प्रकार से स्वतन्त्रता एवं स्वराज्य को साकार करने के लिए प्रयासरत हैं इस दिशा में अब तक हुए प्रयास का मूल्यांकन करने, आज की परिस्थिति मे अभियान की आगामी दिशा तय करने, समझ की एकरूपता एवं परस्पर स्नेह, मैत्री, विश्वास को सफल बनाने हेतु 17 से 19 नवम्बर, 2000 को गोविन्दपुर मे राष्ट्रीय जीवन विद्या सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

अभियान के अर्थ में – सम्मेलन

सम्मेलन = सम्मिलन = सम्यक् मिलन

सम्यक् = पूर्णता के अर्थ में = विकास व जागृति के अर्थ में।

मिलन = परस्पर पूरक होना

सम्मेलन = विकास व जागृति के अर्थ मे परस्पर पूरक होना। वस्तुतः सम्मेलन परस्पर उत्सवित होने का कार्यक्रम है।

अद्भुत उत्सव – अनुसंधान पूरा हुआ

वह दिन (शरद पूर्णिमा विक्रम सम्वत् 2026 तदनुसार सन् 1969) निश्चित ही उत्सव का दिन होगा जब पू० बाबा जी (ए० नागराज जी) को अस्तित्व दर्शन हुआ। अस्तित्व मे जो भी कुछ है उसमे क्या अर्थ है, क्या भाव या मूल्य है वह अनुभव हुआ। उनकी जिन्दगी मे तो इस अनुभव की निरन्तरता बन गयी। सचमुच एक अनुसंधान पूरा हुआ। युगों–युगों से आदमी के भटकाव से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

अस्तित्व मे जहां आदमी समझ में आया वहीं व्यापक सत्ता जिसे हम ईश्वर, परमात्मा, सत्य, ब्रह्म आदि नामों से पुकारते हैं उसका भी अनुभव हुआ। अस्तित्व की सम्पूर्ण व्यवस्था भी समझ मे आ गई। सम्पूर्ण प्रकृति व्यापक सत्ता मे सम्पृक्त है अर्थात भीगी, डूबी, घिरी देखी। सार संक्षेप में अस्तित्व सहअस्तित्व के रूप मे अभिव्यक्त है। सह अस्तित्व में विकास, विकास क्रम, जीवन, जीवन जागृति क्रम, जागृति पूर्णता एवं रासायनिक–भौतिक रचना विरचना दिखाई दी। इस अनुसंधान से सर्वतोमुखी समाधान, अखण्ड समाज एवं सार्वभौम मानवीय व्यवस्था के सूत्र, विधि व प्रक्रिया भी करतलगत हुई। फलतः मानव लक्ष्य निश्चित हुआ। कुल मिलाकर सम्पूर्ण मानव जाति के उत्सव एवं मानव की मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ पूरकता का संयोग उदय हुआ।

हम लोग तो आज भी रूढ़िवादी निरर्थक परम्परा से अलग–थलग खड़े होने से डरते हैं। कई बार तो हमको ऐसा भी बहुत कुछ करना होता है जिसको हम अस्वीकृत कर दिये हैं केवल इस भय से कि कहीं हम अकेले न पड़ जायें। सोचो! बाबा को कैसा लगा होगा, जब उन्होंने पाया होगा कि

अब तक की सारी मानव परम्परा एक तरफ खड़ी है– वह एक तरफ। सारे ज्ञानी– विज्ञानी एक तरफ हैं– एक बिना पढ़ा लिखा व्यक्ति एक तरफ। निश्चित ही सही को समझकर ही साहस व विश्वास (कि सभी मानव इसको समझने के लिए ही हैं) जागृत होता है।

आज भी कोई हमारे पास आकर जब सहसा यह पूछ लेता है कि भाई ये विद्या क्या है और आप क्या कर रहे हैं? तो इतना सार लेखन व वांग्मय के होते भी कई बार तो समझ [illegible] मे सोचो! जब बाबा ने प्रथम बार किसी के समक्ष दर्शन को रखा होगा तो कैसे बताया होगा कि उन्होंने क्या पाया? सामने उपस्थित व्यक्ति की क्या प्रतिक्रिया हुई होगी?

बाबा बताते हैं, जब उन्होंने सम्पूर्ण दर्शन (जो कुछ भी अस्तित्व मे अध्ययन एवं अनुभव किया था) को मात्र सात सूत्रों में लिखा व स्व० रोहन लाल अवस्थी (जो बाबा से समाधि के समय से ही जुड़े थे, जिन्हें बाबा के प्रति बहुत आस्था व दर्शन के प्रति निष्ठा थी) को दिखाया तो अवस्थी जी बोले, "आपने लिखा है तो आपको समझ मे आता ही होगा तभी आपने लिखा, परन्तु न तो यह मुझे समझ मे आता है न ही संसार को ही समझ मे आयेगा।"

तब बाबा ने उन्ही सूत्रों को 70 सूत्रों मे लिखा और दिखाया, अवस्थी जी बोले, "यह आपको तो समझ मे आता ही है, मुझे भी कुछ–कुछ समझ में आता है परन्तु संसार को तो समझ में आने से रहा"।

बाबा ने पुनः उन सूत्रों को कई सौ सूत्रों में लिख कर दिखाया, अवस्थी जी देख कर बहुत प्रसन्न हुए और बोले "हां यह सबको समझ में आयेगा"। यह था "मानव व्यवहार दर्शन" जिसमें सारा कुछ बाबा ने उड़ेल दिया है। सचमुच वह "गागर में सागर" है।

अथक पुरुषार्थ

अस्तित्व में बाबा ने जो देखा उसको मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद नाम दिया। आपने दर्शन को चार भागों (मानव व्यवहार दर्शन, मानव कर्म दर्शन, मानव अभ्यास दर्शन एवं अनुभव दर्शन) में प्रस्तुत किया। सन् 1971 में दर्शन को लिखने एवं बोध कराने की आवश्यकता आप मे उदय हुई। बाबा लेखन के साथ–2 आगन्तुक जिज्ञासुओं को दर्शन का बोध कराने के लिए भी प्रवृत्त हुए। मार्च 1979 मे दिव्य पथ संस्थान की स्थापना हुई। स्व० स्वामी पूर्णानन्द तीर्थ एवं श्री एम० एन० वैंक्टाचलैया जी (अध्यक्ष संविधान समीक्षा आयोग एवं पूर्व मुख्य न्यायाधीश सर्वोच्च न्यायालय) के सौजन्य से 1979 में बंगलौर में मध्यस्थ दर्शन का प्रथम अध्ययन शिविर हुआ। इस शिविर में दर्शन की आवश्यकता महसूस की गई लेकिन भाषा की जटिलता के कारण इसका लोक व्यापीकरण अति कष्टदायक है यह उद्गार भी आये। बाबा इसका उपाय सोचने लगे, साथ ही अमरकंटक, शहडोल, जबलपुर, दुर्ग, भिलाई, रायपुर, बिलासपुर, रीवा, सतना, नागौद आदि जगहों पर शिविर आयोजित हुए। बाबा को सभी जगह दर्शन की आवश्यकता की आवाज सुनने को मिली, साथ ही भाषा की कठिनाई भी। भाषा की कठिनाई को आपने विवेक सम्मत विज्ञान एवं विज्ञान सम्मत [illegible] किया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दर्शन को हिन्दी में लिखने में आयी बाधा को बाबा जी ने परिभाषा संहिता के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया। इससे शनैः–शनैः लोकव्यापीकरण की सम्भावना बलवती हुई।

1985–86 तक आपने समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद एवं अनुभवात्मक आध्यात्मवाद को बाबा ने अपने में व्यवस्थित कर लिया। इसके उपरान्त सन् 1990 तक आवर्तनशील अर्थशास्त्र, व्यवहार वादी समाज शास्त्र (मानवीयता पूर्ण आचार संहिता रूपी संविधान की व्याख्या) और मानव संचेतना वादी मनोविज्ञान की सम्पूर्ण रूपरेखा को आपने सजो लिया। इसी क्रम में जीवन विद्या योजना, परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य योजना एवं शिक्षा का मानवीयकरण जैसी मौलिक योजनाओं से आप सम्पन्न हुए।

पू0 बाबा जी के सम्पर्क में आस्थावादी विधि से क्रमशः श्री स्व0 रोहन लाल अवस्थी, श्री गणेश दत्त कटारा, श्री भगवती प्रसाद शर्मा, श्री सत्यप्रकाश सिंह, श्री जगदीश प्रसाद सोनी, श्री अशोक शर्मा एवं श्री एस0 एन0 पुराणक जी सम्पर्क में आये। तर्क और जिज्ञासा विधि से श्री नन्द कुमार श्रीवास्तव, श्री पवित्र कुमार चौधरी, श्री अवधेश कुमार श्रीवास्तव, श्री यशवन्त कुमार सिन्धु, श्री अरुण चन्द साहनी, श्री बी. पी. शर्मा, श्री रमेश चन्द रस्तोगी, श्री नरेन्द्र मिश्र, श्री राजन शर्मा एवं श्री अग्रहार नरसिंह मूर्ति आपके सम्पर्क में आये और सहयोगी बने।

आई०आई० टी० दिल्ली एवं गोविन्दपुर

श्री ए0 नरसिंह मूर्ति जी ने प्रो0 पद्मा वासुदेवन (आई0 आई0 टी0 दिल्ली) को पू0 बाबाजी के बारे में बताया। प्रो० वासुदेवन जी ने यह जानकारी डा0 एस0 डी0 शर्मा जी (आई0 आई0 टी0, दिल्ली) को दी। मई 1988 में डा0 एस0 डी0 शर्मा जी ने आई0 आई0 टी0 दिल्ली में योग क्लब के माध्यम से पू0 बाबा जी का शिविर सम्पन्न कराया। एक लम्बी प्रक्रिया, शंका–कुशंका एवं योग–संयोग के बाद जनवरी 1991 में स्व0 डा0 यशपाल सत्य जी को विद्या छू गयी। श्रद्धेय भाई सत्य जी ने इस ओर अपने निकटवर्ती आत्मीय जनों को भी प्रेरित किया तथा इसके आधार पर आई0 आई0 टी0 दिल्ली में कोर्स भी पढ़ाने शुरू कर दिये। इस प्रकार आई0 आई0 टी0 दिल्ली में जीवन विद्या की चर्चा प्रारम्भ हो गई। 22 जून 1992 को आई०आई०टी० दिल्ली में सरदार अर्जुन सिंह जी के आमंत्रण पर एक सभा हुई जिसमें गोविन्दपुर बिजनौर में विद्या को प्रमाणित करने का निश्चय हुआ। आई०आई० टी० दिल्ली के सहयोग से गोविन्दपुर में अभियान प्रारम्भ हुआ। मार्च 1993 में गोविन्दपुर में पहला जीवन विद्या शिविर पू0 बाबा जी ने प्रबोधित किया। 13–14 मार्च 1993 को गोविन्दपुर की भावी योजनाओं के स्वरूप एवं न्यास की स्थापना हेतु एक संगोष्ठी पू0 बाबा जी के सानिध्य में हुई। इसके साथ ही स्वामी सच्चिदानन्द स्मारक विद्यालय, गोविन्दपुर में शिविरों का सिलसिला चल पड़ा। मई 1993 में श्रद्धेय भाई यशपाल सत्य जी ने प्रबोधन का दायित्व सम्भाला। मध्यस्थ दर्शन को समझकर जब सत्य जी ने अपने शब्दों में व्यक्त किया तो विद्या का एक सुन्दर, सरल एवं व्यवस्थित स्वरूप निकलकर आया।

विद्यालय में भी दर्शन की समझ के आधार पर छोटे–प्रयास प्रारम्भ हुए। 1 मार्च 1994 को दिल्ली में जीवन विद्या न्यास का पंजीकरण हुआ इससे आगे की स्थिति–परिस्थिति एवं प्रक्रिया से हम परिचित हैं ही।

बड़ी सरल–सहज बात

जीवन–विद्या बड़ी सहज–सरल है और हर व्यक्ति की आवश्यकता है। स्वयं अपने से, अपनी कहानी से जीवन विद्या परिचित कराती है। अपने से परिचित होते ही सम्बन्ध और व्यवस्था में जागृति प्रारम्भ हो जाती है।

लेकिन भय, प्रलोभन, आस्था, प्रिय–हित–लाभ एवं अपेक्षा, उपेक्षा व विरोध में जीती मानव परम्परा दीनता, हीनता एवं क्रूरता का शिकार है। इस कारण कोई अपने को कम मान लेता है और कोई अधिक।

प्रचलित मान्यताओं (आध्यात्मिक–धार्मिक, वैज्ञानिक विचारधाराओं) से भिन्न होने के कारण जीवन–विद्या प्रारम्भ में थोड़ी अपरिचित एवं नयी सी लगती है। अनुभव (सत्य) को वर्णन करने के लिए अभी भाषा का विकास भी नहीं हुआ। साथ ही शब्द से अर्थ देखने की परम्परा न होने के कारण प्रारम्भ में विद्या कठिन सी लगती है।

यह नयी, अपरिचित व अप्रचलित बात अब तो बहुतों की स्वीकृति, समझ व जीने में (प्रचलन) आने लगी हैं। अब तो विद्या की धारा अनुस्यूत बहने लगी है। इसका अध्ययन करने वालों में अपने को तथा अपने परिवार को परिपूर्ण देखने की चाहत जागृत होने लगी हैं। बहुतों को इन बातों (विद्या) से धरती पर मानवीय व्यवस्था व परम्परा के साकार होने की सम्भावना भी दिखने लगी है।

विद्या के धारक–वाहक (प्रबोधक) के रूप में भी कई लोग अपने को पाने लगे हैं। जगह–जगह जीवन विद्या शिविर, गोष्ठियाँ, शिक्षा के मानवीयकरण के प्रयास, संविधान के मानवीयकरण के प्रयास तथा स्वराज्य(मानवीय व्यवस्था) के प्रयास भी होने लगे हैं। परिवार मानव पत्रिका का सम्पादन हो ही रहा है ... की संख्या भी हजारों में पहुँच गई है। यह सब सचमुच उत्सव की बात है। इसमें बाबा का अथक परिश्रम व प्रारम्भ में बाबा व विद्या से जुड़े लोगों का बहुत सहयोग रहा है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी – सम्मेलन

अमरकंटक, जबलपुर, बिलासपुर, रीवा, नागोद–सतना, भिलाई–अक्तई (दुर्ग), रायपुर, कांकेर–लाल माटवाड़ा (बस्तर), ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट (सतना), बांदा, दिल्ली एवं देश के विभिन्न भागों में विद्या के प्रमाणीकरण की सम्भावना तलाशी जाने लगी।

सर्वतोमुखी समाधान, अखण्ड समाज एवं मानवीय विश्व व्यवस्था रूपी अभ्युदय अभियान तथा देश के विभिन्न भागों में चल रहे प्रयास में संगीतीकरण को ध्यान में रखकर प्रथम जीवन विद्या राष्ट्रीय सम्मेलन 17–18 दिसम्बर 1994 को गोविन्दपुर में हुआ। गोविन्दपुर सम्मेलन के आशय को एक व्यवस्थित रूप देने एवं व्यापक कार्य योजना तैयार करने के लिए दूसरा सम्मेलन 21 से 23 दिसम्बर 1996 को नागौद (सतना) म0 प्र0 में आयोजित हुआ जिसमें उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए परस्पर दायित्वों का निश्चयन हुआ। इस सम्मेलन की उपलब्धियों का मूल्यांकन एवं आगामी कार्यक्रमों में लोगों की भागीदारी को ध्यान में रखते हुए तीसरा सम्मेलन 20–22 सितम्बर 1997 को गायत्री प्रज्ञा पीठ–नन्दिनी नगर (भिलाई) जिला–दुर्ग–म०प्र० एवं 25 से 27 दिसम्बर 1998 को मॉडल स्कूल ग्राम अगराल (म०प्र०) में चतुर्थ सम्मेलन का आयोजन हुआ। झाबुआ सम्मेलन मानव विकास एवं प्राकृतिक प्रबंधन समिति इंदौर व जीवन विद्या समिति झाबुआ के सम्मिलित प्रयास से हुआ। इसी क्रम मे पिछले वर्ष 22 से 24 अक्टूबर 1999 में गायत्री प्रज्ञा पीठ आश्रम आंवरी (धारामा) जिला कांकेर बस्तर क्षेत्र–म०प्र० में पाँचवा सम्मेलन हुआ। आँवरी सम्मेलन में इस वर्ष का सम्मेलन गोविन्दपुर (बिजनौर) में निश्चित हुआ। अभियान को स्थिरता प्रदान करने के लिए सभी सम्मेलनों में यह आवश्यक समझा गया कि व्यक्ति जागृत हो, उसकी समझ पूर्ण हो। स्वयं में व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्व स्फूर्त तरीके से ही हो। संक्रमण काल में सहअस्तित्व के सिद्धान्त एवं आवर्तनशील पद्धति से स्वावलम्बन पर योजनाबद्ध तरीके से प्रयोग व शोध कार्य करने की आवश्यकता भी उभरी। समझ की एकरूपता को सुनिश्चित करने के लिए अनुभव शिविर शुरू हुए। शिक्षा के मानवीयकरण, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था की चर्चा भी सभी सम्मेलनों में हुई। विगत लगभग सात वर्षों में उपर्युक्त सभी आयामों में विभिन्न जगह पर, विभिन्न तरीके से प्रयास भी चल रहे हैं।

सम्मेलन की आवश्यकता

अमरकंटक, बिलासपुर, भिलाई–नन्दिनी नगर (दुर्ग), रायपुर, आंवरी–काँकेर (बस्तर क्षेत्र), नागौद (सतना), झाबुआ, इन्दौर, भोपाल, विदिशा, शिवपुरी, सिवनी, सूरत (गुजरात), कानपुर, बलिया, बाँदा, अलीगढ़, सिकन्दराराऊ (हाथरस), दिल्ली, हरियाणा, बीहटा (बुलन्दशहर), टाण्डा–बिलारी (मुरादाबाद), बिजनौर, गोविन्दपुर आदि स्थानों पर विद्या को लेकर कार्यक्रम चल रहें हैं। अब जरूरत है इन सभी स्थानों को ध्यान में रखकर स्वराज्य अभियान को निश्चित दिशा व गति दी जाये। सही मायनों में सम्मेलन का यह समीचीन अवसर है।

अभियान की तैयारी के अर्थ में

इस बार का गोविन्दपुर सम्मेलन अभियान की तैयारी के अर्थ में रखा है। यदि तैयारी नहीं होगी तो हम कहीं जाकर कम पड़ जायेगें। कोई कार्य शुरू करेंगे और आगे क्या करे यदि यह स्पष्ट नहीं होगा तो वह कार्य बन्द करना पड़ेगा या बन्द हो जायेगा। "स्वराज्य अभियान" धरती पर अपनी तरह का पहला प्रयास है। इसकी पूर्व तैयारी हो जाये तो निश्चित ही हम सफल होंगे। स्वराज्य अभियान की तैयारी के अर्थ में सम्मेलन के लिए निम्नलिखित बिन्दू नजर आतें हैं। आपकी प्रस्तुति में इन सबका समावेश उपकारी होगा।

1. **प्रबोधक परिपूर्णता**–जो भी व्यक्ति प्रबोधन में लगे है उनकी हर आयाम–दिशा–कोण–परिपेक्ष में परिपूर्णता आवश्यक है ताकि वो कही कम न पड़े। उनके संपूर्ण प्रशिक्षण का क्या स्वरूप हो? इसके लिए रखे गए अनुभव शिविरों का क्या स्वरूप हो ? कैसे उनको समाधान–स्वावलम्बन व मानवीयतापूर्ण आचरण में परिपूर्ण बनाया जाये?

2. **समझ की एकरूपता**– सभी प्रबोधक वस्तु को समान रूप में रख पा रहें है इसको जाँचना, कमियों की भरपाई करना इस हेतु निश्चित स्वरूप बनाने की आवश्यकता है।

3. **परस्पर मैत्री**– सभी प्रबोधकों एवं अभियान को अर्पित मित्रों में परस्पर विश्वास व श्रेष्ठता का सम्मान हो। वास्तव में अभियान तो परस्पर पूरकता (न्याय) को प्रमाणित करने का ही नाम है। इसकी हम सभी मे

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

आवश्यकता कैसे उदय हो इस हेतु सार्थक प्रयास का क्या स्वरूप हो, तय करना।

4. **जीवन विद्या शिविर** का निश्चित स्वरूप बच्चों, युवा, महिलाओं, परिवार एवं समय को ध्यान में रखकर और अधिक प्रभावी बनाना।

5. **शिक्षा के मानवीयकरण** के स्वरूप यथा विद्यालय, पाठ्य पुस्तक, शिक्षक आदि को तय करना। स्वतंत्र विद्यालयों का निर्माण, चल रहे विद्यालयों में भागीदारी का स्वरूप निश्चित करना। विद्यालय के लिए उत्सुक व्यक्तियों से हमारा कार्य विधान का स्वरूप क्या हो? विद्यालय स्वायत्तता का स्वरूप तथा शिक्षकों के स्वावलम्बन के स्वरूप को निकालना।

6. **स्वराज्य योजना**– का स्वरूप, विधि, प्रणाली, पद्धति को सुनिश्चित करना उसकी पूर्व तैयारी के लिए कार्यक्रम बनाना।

7. **परस्पर भागीदारी** स्वराज्य के अर्थ में विभिन्न स्थानों की परस्पर भागीदारी के स्वरूप को स्पष्ट करना।

8. **प्रकाशन**– बाबा के संपूर्ण वांग्मय का प्रकाशन, सुरक्षा व सदुपयोगिता को सुनिश्चित करना। स्वराज्य के अर्थ में अन्य शिक्षण सामग्री एवं साहित्य तैयार करना एवं उसका प्रकाशन करना।

9. **मानवीय स्वावलम्बन** को (आज की अव्यवस्था में) सुनिश्चित करना एवं अभियान से जुड़े सभी जन स्वावलम्बी हों इसके स्वरूप को सुनिश्चित करना।

10. **अन्य संस्थाओं–संगठनों** के साथ भागीदारी का स्वरूप निश्चित करना।

11. **विद्या के प्रचार–प्रसार** के स्वरूप को निश्चित करना।

12. **परिवार मानव पत्रिका** के सम्पादन, लेखन, प्रकाशन, वितरण में सभी केन्द्रों की भागीदारी के स्वरूप को सुनिश्चित करना।

13. **अभियान के लिए** सूचना प्रौद्योगिकी (आई. टी.) के प्रयोग का स्वरूप–प्रारूप तय करना।

14. **संपूर्ण कार्यक्रमों का मूल्यांकन – प्रोत्साहन व गति** के स्वरूप को निश्चित करना। ऐसे बहुत से और बिन्दु भी हो सकते हैं जो स्वराज्य की तैयारी की दृष्टि से आवश्यक लगते हों परन्तु हमारा ध्यान न गया हो उनको इंगित करने की आप सभी से अपेक्षा है।

बिजनौर–गोविन्दपुर

जनपद बिजनौर उ०प्र० के मुरादाबाद मण्डल में 29 डिग्री अक्षांश तथा 70 से 79 डिग्री पूर्वी देशान्तर के मध्य शिवलिंग पर्वत श्रृंखलाओं की छाया में गंगा के किनारे स्थित है। बिजनौर जनपद में दक्षिण में ज्योतिबा फूलेनगर, उत्तर में–पौड़ी गढवाल, पूर्व में ऊधमसिंह नगर एवं मुरादाबाद तथा पश्चिम में गंगा नदी हरिद्वार, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर तथा मेरठ जनपदों की सीमा बनाती है। जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4497 वर्ग किमी. एवं समुद्र तल से औसत ऊँचाई 204 मी० है। जनपद में मुख्य व्यवसाय कृषि है साथ ही गन्ना मिल, कागज मिल, सल्फीटेशन प्लॉट, लकड़ी की हस्त शिल्प इकाईयां, कांच की शीशियां, पेंटिंग ब्रुश तथा पावर लूम उद्योगों से सम्बन्धित इकाईयाँ भी है। बिजनौर जनपद व तहसील, विकास खण्ड–हल्दौर में ग्राम–खारी, रामपुर, मौजीपुर, गोपालपुर, सिहौरा एवं करौंदी के बीच में गैर आबाद मौजा गोविन्दपुर है।

गोविन्दपुर की पृष्ठभूमि

सन् 1961 में विनोबा के निकट सहयोगी रहे एक विदेशी शिष्य स्वामी सच्चिदानन्द जी इस स्थली पर आये। स्वामी जी प्रचलित तथाकथित सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था के खिलाफ पहले से ही संघर्षरत थे। गोविन्दपुर आकर उन्होंने इस दिशा में अपना संघर्ष और तेज कर दिया। 5 अप्रैल 1971 को इस संघर्ष में स्वामी जी शहीद हो गये। स्वामी जी ने यहाँ पर्सनल्टी फॉर्मेशन सेन्टर (व्यक्तित्व निर्माण केन्द्र) चलाया एवं पर्सनल्टी नामक एक अंग्रेजी पत्र भी यहाँ से प्रकाशित किया।

स्वामी जी के शहीद होने पर यह भूखण्ड वीरान हो गया। 1979 में स्वामी जी की इस साधना स्थली पर एक व्यक्ति जिनका नाम सरदार तनजीत सिंह है आये। सरदार तनजीत सिंह जी ने इस वीराने को चमन में बदल डाला। इस भूमि को आपने कृषि योग्य बनाया, एक ट्यूबवैल, पक्की नालियां एवं एक भवन का निर्माण कराया। ढाई वर्ष यहाँ रहने के उपरान्त आप वापिस विदेश (कनाडा) लौट गए।

इसके बाद स्वामी जी के छोटे भाई सरदार अर्जुन सिंह समदर्शी जी यहाँ आये। इस स्थली पर आपने कुछ नये प्रयोग शुरू किये। स्वामी जी की स्मृति में उन्हीं की इच्छाओ के अनुरूप एक स्कूल की स्थापना 1985 में हुई। छोटा सा दो कमरों का स्कूल अब हाई स्कूल हो गया। यह सरदार अर्जुन सिंह समदर्शी जी के पुरूषार्थ का ही फल है।

सरदार अर्जुन सिंह समदर्शी जी की उदारता–कामना, श्रद्धेय भाई यशपाल सत्य जी की प्रेरणा, श्री संजीव जैन जी के सहयोग एवं पू० बाबा जी के शुभाशीष से मार्च 1993 में गोविन्दपुर में अभियान प्रारम्भ हुआ। श्री प्रशान्त महर्षि जी इसमें निमित्त बने। प्रो० पी.एल.धर जी, प्रो० ऋषिराज गौड़ जी, डा० एस.डी. शर्मा जी, डा० सन्तोष जी, डा० देवव्रत आचार्य जी, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी, श्री रमेश शर्मा जी, श्री विजय पाल सिंह जी एवं श्री जीत सिंह जी इस प्रयास में पूरक–शुभाकाँक्षी बने।

सम्मेलन में भागीदारी

सम्मेलन की सफलता को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी हमारी–आपकी है अतः इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए उपरोक्त बिन्दुओं को सार्थक बनाने हेतु आप सभी की सम्मेलन में भागीदारी अपेक्षित है।

दूसरे इस धरती पर स्वराज्य से महत्त्वपूर्ण कोई कार्य आप हम नहीं दिखा सकते, इन अर्थों में भी भागीदारी अपेक्षित है। तीसरा सबको ध्यान में रखकर ही सम्मेलन का आयोजन किया जाता है ऐसे में किसी की भागीदारी न हो तो फर्क पड़ता है, सम्मेलन का अर्थ पूरा नहीं पड़ता। अतः सभी जगह से सभी प्रमुख साथियों की भागीदारी की अपेक्षा है।

- आप अपने कार्य का संक्षिप्त स्पष्ट विवरण, आगामी योजना तथा परस्पर सहयोग के ताने–बाने पर अपने विचार सम्मेलन से पूर्व लिखकर भेज सके तो सार्थक रहेगा। अपनी मर्यादाओं का भी उल्लेख करें।
- आप 16 नवम्बर की शाम तक गोविन्दपुर पहुँच जाएं। साधारण भोजन एवं आवास की व्यवस्था रहेगी। मार्ग व्यय आपको स्वयं वहन करना होगा। नवम्बर में यहाँ सर्दी पड़ती है अतः गर्म कपड़े साथ लाएं।

कार्यक्रम

17 नवम्बर, शुक्रवार

समय	सत्र	कार्यक्रम
प्रातः 10.00 से 11.15 तक	प्रथम	सम्मेलन का उद्घाटन, वन्दना, कामना, संगीत, परिचय सम्मेलन से अपेक्षा एवं रूपरेखा व बाबा जी का उद्बोधन
प्रातः 11.15 से 12.30 तक	द्वितीय	अभियान की स्थिति–परिस्थिति, उपलब्धि एवं भावी कार्यक्रम की प्रस्तुति– रायपुर, भिलाई, नन्दिनी नगर, कांकेर, आंवरी, बिलासपुर, अगरकंटक
अपरान्ह 2.00 से 3.30 तक	तृतीय	प्रस्तुति क्रमशः झाबुआ, इन्दौर, नागौद, शिवपुरी, विदिशा, सूरत (गुजरात)
सायं 4.00 से 6.00 तक	चतुर्थ	प्रस्तुति क्रमशः बलिया, बांदा, कानपुर, लखनऊ, सिकन्दराराऊ (हाथरस), अलीगढ़, बीहटा (बुलन्दशहर), टाण्डा–बिलारी (मुरादाबाद), दिल्ली, हरियाणा, बिजनौर गोविन्दपुर एवं अन्य
रात्रि 8.00 से 9.00 तक	पंचम	छोटे समूह में चर्चाएं

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

18 नवम्बर, शनिवार

प्रातः 8.30 से 10.30 तक	प्रथम	मंथन- जीवन विद्या योजना, स्वास्थ्य–संयम योजना
प्रातः 11.00 से 12.30 तक	द्वितीय	मंथन- शिक्षा का मानवीयकरण योजना
अपरान्ह 2.00 से 3.30 तक	तृतीय	मंथन- परिवार मूलक स्वराज्य योजना एवं स्वावलम्बन
सायं 4.00 से 6.00 तक	चतुर्थ	मंथन- अभियान का संयोजन, समन्वय एवं संसाधन, परिवार मानव पत्रिका
रात्रि 8.00 से 9.00 तक	पंचम	आज की परिस्थिति में अभियान की भावी दिशा व कार्य योजना तैयार करना

19 नवम्बर, रविवार

उत्सव

(सम्मेलन में आये प्रतिनिधियों के साथ नव आगन्तुक एवं क्षेत्रीय जनों की भागीदारी)

प्रातः 08.00 से 10.00 तक	अतिथियों का जलपान एवं भोजन
प्रातः 10.00 से 12.00 तक	संगीत, अभियान का परिचय, सम्मेलन की संक्षिप्त प्रस्तुति
दोपहर 12.00 से 1.00 तक	सुखमय धाम–जीवन विद्या प्रतिष्ठान की भावी योजना–भागीदारी का आह्वान
दोपहर 1.00 से 2.00 तक	समापन– अतिथियों के उद्‌गार, पूज्य बाबा जी का आशीर्वचन एवं आभार

आहार-विहार

नाश्ता	प्रातः	: 7.30–8.15 तक	आरोग्य पेय / चाय	प्रातः	: 10.30–11.00 तक
भोजन	दोपहर	: 12.30–2.00 तक	आरोग्य पेय / चाय	अपरान्ह	: 3.30–4.00 तक
भोजन	रात्रि	: 7.00–8.00 तक			

सम्पर्क-सूत्र - दिल्ली

1. डा० संजीव जैन, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग (निवास–36 वैशाली), आई.आई.टी. हौज खास, नई दिल्ली, फोन : निवास– 6525478, 6591593, फोन : कार्यालय– 6591060
2. डा० सतेन्द्र, MIG, B-715, डी.डी.ए. फ्लैट चित्रकूट, पूर्वी लोनी रोड, दिल्ली–110 093 फोन : निवास– 2813068
3. रमेश चन्द्र रस्तौगी–14 / 197, मालवीयनगर, नई दिल्ली, फोन : निवास– 6880704, 6283155 फोन : कार्यालय– 6018693, 6011484 मोबाइल : 9810179080
4. अशोक–शीला, 1461, Sec-37, नोएडा–201303, उ०प्र०, फोन : निवास– 0120–4572977 (दिल्ली से नोएडा हेतु: 91–4572977)

बिजनौर

1. महाराज सिंह, जिला सहकारी बैंक निकट विकास भवन, रोडवेज बस स्टैण्ड, बिजनौर।
   फोन: कार्यालय– 01342–62832,
   निवास–रशीदपुर गढी–निकट बिजनौर।
   फोन : 01342–64497
2. मा० जगराम सिंह, धुखारा, विदुर कुटी रोड–बिजनौर
   फोन : निवास – 01342–61377

धामपुर

पी.पी. सिंह, अधिशासी अध्यक्ष
धामपुर शुगर मिल्स, धामपुर जिला बिजनौर (उ०प्र०)
फोन : निवास– 01344–20149, 20074
कार्यालय– 01344–20985, 20006

गोविन्दपुर

रणसिंह आर्य, देशपाल, वीर सैन–गोविन्दपुर–खारी
जि०–बिजनौर, फोन–01342–87060, 87511

सूचना

- दिल्ली, धामपुर, नजीबाबाद, बिजनौर से गोविन्दपुर आने के लिए सूचना पर गाड़ी की व्यवस्था करने का प्रयास किया जायेगा।
- दिल्ली से 16 नवम्बर की दोपहर में गोविन्दपुर के लिए गाड़ी चलेगी। इसके अलावा दिल्ली से निजी वाहनों से भी लोग सम्मेलन में आयेंगे, उनके साथ भी आया जा सकेगा।
- दिल्ली में विश्राम करने / ठहरने, वापसी का आरक्षण करवाने हेतु दिल्ली के मित्रों से सम्पर्क करें।
- किसी भी प्रकार के सहयोग हेतु उपयुक्त सम्पर्क पर अग्रिम सूचना देने का कष्ट करें।

मार्ग

- गोविन्दपुर, खारी गाँव के उत्तर में 15 किमी. पर खारी–मौजीपुर मार्ग पर है। खारी, बिजनौर से 8 किमी. पूरब में झालू के निकट, बिजनौर–झालू– नहटौर मार्ग पर है। बिजनौर में झालू बस स्टैण्ड से या रामलीला मैदान से खारी के लिए प्राइवेट बस मिलती है। चाँदपुर, नहटौर, नगीना से भी प्राइवेट बसें खारी आती हैं।
- दिल्ली में अन्तर्राज्यीय बस अड्डा–कश्मीरी गेट, मेरठ, मुरादाबाद, देहरादून, नजीबाबाद, मुजफ्फरनगर से बिजनौर के लिए अच्छी बस सेवा उपलब्ध है। अपने वाहन से दिल्ली–मेरठ से बायां (मवाना या खतौली) मौरापुर होकर बिजनौर आए। देहरादून–हरिद्वार से नजीबाबाद होकर सड़क के रास्ते बिजनौर आए।
- नजीबाबाद–गजरौला रेल मार्ग पर निकटतम रेलवे स्टेशन खारी–झालू एवं बिजनौर है।
- पूर्वोत्तर से लखनऊ मुरादाबाद होकर जम्बूतवी व देहरादून की ओर जाने वाली रेलगाड़ियों से धामपुर या नजीबाबाद उतरें। लखनऊ–सहारनपुर एक्स० से बिजनौर उतरें।
- खारी बस स्टैण्ड पर शिव आर्य मेडिकल स्टोर, खारी में सड़क पर ही श्री प्रशान्त महर्षि के फार्म या खारी गाँव में श्री सोम दत्त पाण्डे जी से आवश्यकता पड़ने पर सम्पर्क कर सकते हैं।

इस खुशहाली के अवसर पर गोविन्दपुर में आपको आमन्त्रित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। इस उत्सव बेला में आपकी गौरवमय उपस्थिति, प्रस्तुति, सहभागिता, प्रेरणा एवं आशीर्वाद से हम सब परस्पर उपकारान्वित होगें। पहले दो दिन की चर्चा अभियान में सक्रिय रूप से जुड़े साथियों के लिए सार्थक है। अन्तिम (तीसरे) दिन उत्सव में सभी का स्वागत है। सम्मेलन का **विस्तृत विवरण परिवार मानव पत्रिका के अंक–26, जुलाई–अगस्त 2000 के पृष्ठ 19 से 26 में भी छपा है।** नित्य उत्सव कामना के साथ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या परिवार, गोविन्दपुर-बिजनौर, उ०प्र०

आमन्त्रण

अट्ठारहवाँ

जीवन विद्या राष्ट्रीय सम्मेलन

दिनांक 17 से 20 अक्टूबर 2013

प्रतिष्ठा में -

.....

.....

.....

.....

प्रेषक

जीवन विद्या प्रतिष्ठान

गोविन्दपुर-खारी (खारी), बिजनौर, उ0 प्र0-246728

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

आमन्त्रण

सम्माननीय मित्रों, भाइयों एवं बहनों,

सर्वशुभ अर्थात सर्वतोन्मुखी समाधान के आशय से एवं परस्पर विश्वास, सम्मान, स्नेह एवं मैत्री के भाव में मिलन ही **"जीवन विद्या राष्ट्रीय सम्मेलन"** है। इस वर्ष 18 वाँ राष्ट्रीय जीवन विद्या सम्मेलन दिनांक 17 से 20 अक्टूबर 2013 में जीवन विद्या प्रतिष्ठान, गोविन्दपुर-खारी (झालू) बिजनौर - उ0 प्र0 में आयोजित किया जाना निश्चित हुआ है।

सर्वतोन्मुखी समाधान का प्रमाण अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था है। इस बार सम्मेलन के विचार-विमर्श एवं मनन की केन्द्रीय वस्तु **"मानवीय व्यवस्था-स्वराज"** है। मानवीय व्यवस्था की आवश्यकता, स्वरुप, उपलब्धियाँ, सम्भावना, चुनौतियां एवं इस हेतु योग्यता-अर्जन पर चर्चा होगी। अन्तिम दिन, 20 अक्टूबर रविवार को मुख्य रुप से गंगा-यमुना पश्चिमी दोआब तथा देश के अन्य हिस्सों के कुछ शुभाकांक्षी मित्रों के बीच **"समाज-संवाद"** के रुप में इन बातों को संक्षिप्त में प्रस्ताव के रुप में रखा जायेगा तथा इस पर खुली चर्चा होगी।

इस मानवीय लक्ष्य के तहत् मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था को साकार करने के अर्थ में आप-हम सब प्रयत्नशील हैं। इस प्रयत्न की समीक्षा, मूल्यांकन, उपलब्धियाँ एवं भावी दिशा पर विचार-विमर्श किया जायेगा। सम्मेलन की सफलता हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी पर निर्भर है। अतः सभी प्रमुख साथियों की सहभागिता की अपेक्षा है।

आप हम सब परस्परता में उत्सवित एवं उत्साहित हों इस शुभकामना के साथ आप सादर आमन्त्रित है।

:: निवेदक ::

जीवन विद्या प्रतिष्ठान परिवार

गोविन्दपुर-खारी, बिजनौर, उ0 प्र0

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

व्यवस्थागत सूचनाएं

मंच चर्चा/गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करने के लिए समय के निर्धारण हेतु एवं सम्मेलन की और अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु **अनुराग 09411144021** या **मृत्युंजय 09430249384** से सम्पर्क करें।

अपने आगमन एवं प्रस्थान की पूर्व सूचना तथा पंजीकरण हेतु msyatra@gmail.com / jvpbijnor@gmail.com E-mail पर प्रेषित करें या **हितेन्द्र सिंह 09756581834** या **गंगाशरण 09837702723** मोबाईल नं0 पर sms व संपर्क करें। e-mail/ sms में नाम, पता, पहुँचने का समय एवं साधन (ट्रेन/बस/निजी वाहन) का विवरण अवश्य देवें।

गोविन्दपुर, खारी गाँव के उत्तर मे 1.5 कि0 मी0 पर खारी-मौजीपुर मार्ग पर अवस्थित है। खारी, बिजनौर से 8 किमी पूरब में झालू से पहले बिजनौर-झालू-नहटौर मार्ग पर है। बिजनौर में झालू बस स्टैण्ड से या रामलीला चौक से खारी के लिए प्राईवेट बसें मिलती है। यात्रा मार्ग की अधिक जानकारी के लिए दिल्ली में **अंकित 09810146679** या **सुनीता जैन 09810052927** एवं बिजनौर में **समरपाल 09758076268** या **गौतम सिंह 09568386137** से सम्पर्क करें।

एक दिन पूर्व सूचना के आधार पर बिजनौर बस स्टैण्ड/रेलवे स्टेशन से वाहन की व्यवस्था की जायेगी एवं इसके लिए **समरपाल 09758076268** या **गौतम सिंह 09568386137** से सम्पर्क करें।

अक्टूबर में यहाँ मौसम काफी अच्छा होता है। ठण्ड पड़नी शुरु हो जाती है। इसके अनुसार कपड़े लेकर आयें।

सम्मेलन 17 अक्टूबर (बृहस्पतिवार) को प्रातः पंजीयन (09.30-10.15), स्वागत (10.15) से प्रारंभ हो जायेगा एवं 20 अक्टूबर (रविवार) को शाम 6 बजे पूर्ण हो जायेगा।

-x-x-x-